



INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RSSB – LDC

लिपिक ग्रेड - II एवं कनिष्ठ



भाग - 3

भारत एवं राजस्थान का भूगोल + अर्थव्यवस्था व
पंचायती राज

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “RSSB LDC (लिपिक ग्रेड-॥ एवं कनिष्ठ सहायक)” को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSSB) द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “LDC (लिपिक ग्रेड-॥ एवं कनिष्ठ सहायक)” में पूर्ण संभव मदद करेंगे। अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित है।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <https://www.infusionnotes.com>

WhatsApp - <https://wa.link/lrn74q>

Online Order - <http://surl.li/rbhbb>

मूल्य : (₹)

संस्करण : नवीनतम

<u>भारत का भूगोल</u>		
क्र.सं.	अध्याय	पेज
1.	सामान्य परिचय	1
2.	भारत की स्थिति एवं विस्तार	2
3.	प्रमुख स्थलाकृतियाँ	8
4.	मानसून तंत्र एवं वर्षा का वितरण	26
5.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	40
6.	मृदा	53
7.	वन एवं वनस्पति	56
8.	प्रमुख फसलें	63
9.	प्रमुख खनिज	71
10.	ऊर्जा संसाधन	76
11.	पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय मुद्दे	83
12.	उद्योग	98

<u>राजस्थान का भूगोल</u>		
1.	सामान्य परिचय	108
2.	राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप	124
3.	मानसून तंत्र एवं जलवायु	135
4.	अपवाह तंत्र (नदियाँ, झीलें एवं बाँध)	142
5.	प्राकृतिक वनस्पति	160
6.	मृदा	172
7.	प्रमुख फसलें	178
8.	राजस्थान में पशुपालन	189
9.	प्रमुख उद्योग	199
10.	प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें	204

11.	जनसंख्या-वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात एवं प्रमुख जनजातियाँ	213
12.	खनिज-धात्विक एवं अधात्विक	223
13.	ऊर्जा संसाधन- परंपरागत एवं गैर परंपरागत	236
14.	जैव विविधता एवं इनका संरक्षण	245
15.	पर्यटन स्थल एवं परिपथ	250
16.	राजस्थान राज्य में परिवहन	257
17.	मरुस्थल एवं बंजर भूमि विकास के लिए परियोजनाएं	266
18.	राजस्थान में हस्त उद्योग	268
19.	विभिन्न आर्थिक योजनाएं, कार्यक्रम एवं विकास की संस्थाएं एवं इनमें पंचायती राज का योगदान	276

भारत का भूगोल

अध्याय - 1

सामान्य परिचय

- **अर्थ एवं परिभाषा :-** “ज्योग्राफी” (Geography) अंग्रेजी भाषा का शब्द है, जो ग्रीक (यूनानी) भाषा में ‘ज्योग्राफिया’ (Geographia) शब्दावली से प्रेरित है। इसका शाब्दिक अर्थ ‘पृथ्वी’ का वर्णन करना है।
- ज्योग्राफिया शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग यूनानी विद्वान ‘इरेटॉस्थनीज’ (Eratosthenes 276-194 ई. पू.) ने किया था, इसके पश्चात विश्व स्तर पर इस पृथ्वी के विज्ञान विषय को ज्योग्राफी (भूगोल) नाम से जाना जाने लगा।
- यूनानी एवं रोमन अधिकांश विज्ञानों ने पृथ्वी को ‘चपटा’ या ‘तस्तरीनुमा’ माना, जबकि भारतीय साहित्य में पृथ्वी एवं अन्य आकाशीय पिण्डों को हमेशा ‘गोलाकार’ मानकर वर्णन किया। इसलिए इस विज्ञान को ‘भूगोल’ के नाम से जाना जाता है।
- भूगोल ‘पृथ्वी तल’ या भू-तल (Earth's surface) का विज्ञान है। इसमें स्थान (Space) व उसके विविध लक्षणों (Variable Characters), वितरणों (Distributions) तथा स्थानिक सम्बंधों (Spatial Relations) का मानवीय संसार (World of man) के रूप में अध्ययन किया जाता है।
- “पृथ्वी तल” भूगोल की आधारशिला है, जिस पर सभी भौतिक मानवीय घटनाएँ एवं अन्तः क्रियाएँ सम्पन्न होती रही हैं। ये सभी क्रियाएँ समय एवं ‘स्थान’ के परिवर्तनशील सम्बन्ध में घटित हो रही हैं।
- पृथ्वी तल का भौगोलिक शब्दार्थ बहुत व्यापक है, जिसमें स्थल मण्डल, जल मण्डल, वायुमण्डल, जैव मण्डल, पृथ्वी पर सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रभाव एवं पृथ्वी की गतियों का वैज्ञानिक आंकलन किया जाता है।
- भूगोल में भौतिक एवं मानवीय पहलूओं और उनमें पारस्परिक सम्बंधों का अध्ययन किया जाता है। इसलिए प्रारम्भ से ही भूगोल विषय की दो प्रमुख शाखाएँ उभर कर आयी हैं।
(i) भौतिक भूगोल (ii) मानव भूगोल
- कालान्तर में विशिष्टीकरण (वर्ष 1950 के पश्चात) बढ़ने से इन दो शाखाओं की अनेक उप शाखाएँ विकसित होती गयीं, जिससे विषय सामग्री एवं विषय क्षेत्र में समृद्धि आती गई।
- भूगोल की प्रमुख शाखाएँ एवं उप शाखाएँ निम्नलिखित हैं-

4. भू आकृति विज्ञान	4. औद्योगिक भूगोल
5. जलवायु विज्ञान	5. परिवहन भूगोल
6. समुद्र विज्ञान	6. जनसंख्या भूगोल
7. जल विज्ञान	7. अधिवास भूगोल (i) नगरीय भूगोल (ii) ग्रामीण भूगोल
8. हिमनद विज्ञान	8. राजनीतिक भूगोल
9. मृदा विज्ञान	9. सैन्य भूगोल
10. जैव विज्ञान	10. ऐतिहासिक भूगोल
11. चिकित्सा भूगोल	11. सामाजिक भूगोल
12. पारिस्थितिकी / पर्यावरण भूगोल	12. सांस्कृतिक भूगोल
13. मानचित्र कला	13. प्रादेशिक नियोजन
	14. दूरस्थ संवेदन व जी.आई.एस.

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. भूगोल की जिस शाखा में तापमान, वायुदाब, पवनों की दिशा एवं गति, आर्द्रता, वायुराशियाँ, विक्षोभ आदि के विषय में अध्ययन किया जाता है, वह है-

- (अ) खगोलीय भूगोल
(ब) मृदा भूगोल
(स) समुद्र विज्ञान
(द) जलवायु विज्ञान (द)

2. भूगोल की दो प्रमुख शाखाएँ हैं

- (अ) कृषि भूगोल एवं आर्थिक भूगोल
(ब) भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल
(स) पादप भूगोल एवं जीव भूगोल
(द) मौसम भूगोल एवं जलवायु भूगोल (ब)

3. किस भूगोलवेत्ता ने भूगोल (Geography) शब्दावली का सर्वप्रथम उपयोग किया ?

- (अ) इरेटॉस्थनीज
(ब) हेरेडोटस
(स) स्ट्रैबो
(द) टॉलमी (अ)

4. पृथ्वी की आयु मानी जाती है

- (अ) 4.8 अरब वर्ष
(ब) 5.0 अरब वर्ष
(स) 4.6 अरब वर्ष
(द) 3.9 अरब वर्ष (स)

भौतिक भूगोल	मानव भूगोल
1. भू गणित	1. आर्थिक भूगोल
2. भू भौतिकी	2. कृषि भूगोल
3. खगोलीय भूगोल	3. संसाधन भूगोल

9. भारत के किस प्रदेश की सीमाएं तीन देशों क्रमशः नेपाल, भूटान एवं चीन से मिलती हैं ?

- (A) अरुणाचल प्रदेश (B) मेघालय
(C) पश्चिम बंगाल (D) सिक्किम (D)

10. भारत के कितने राज्यों से समुद्र तटरेखा संलग्न है ?

- (A) 7 (B) 8
(C) 9 (D) 10 (C)

अध्याय - 3

प्रमुख स्थलाकृतियाँ

- भारत के वृहद अक्षांशीय तथा देशांतरीय विस्तार, संरचना की विविधता तथा विभिन्न भू-आकृतिक प्रदेशों के कारण यहाँ पर्याप्त स्थालाकृतिक विविधता पाई जाती है।
- भारत के प्रायद्वीपीय भाग के पठार जटिल भू-गर्भिक संरचनाओं को प्रदर्शित करते हैं। भारत के उत्तर में जहाँ हिमालय जैसी नवीन पर्वत शृंखलाएं स्थित हैं, तो वहीं दक्षिण में कैम्ब्रियन पूर्वकाल की प्राचीनतम चट्टानें मिलती हैं।
- भारत की भू-गर्भिक संरचना के अध्ययन से पहले हमें उसकी उत्पत्ति को जानना जरूरी है। पृथ्वी के भू-गर्भिक इतिहास को 5 कल्पों एजोइक (अर्जैविक), पैल्योजोइक, मेसोजोइक, सेनोजोइक एवं निओजोइक में विभाजित किया जाता है। एजोइक (अर्जैविक) कल्प में जहाँ पैलियो का निर्माण हुआ, जिसका विभाजन आगे चल कर कार्बोनिफेरस युग में हुआ।
- इस विभाजन के कारण पैलियो दो भागों में विभाजित हो गया। उत्तरी भाग अंगारालैण्ड तथा दक्षिणी भाग गोण्डवाना लैण्ड कहलाया। जुरैसिककाल में गोण्डवाना लैण्ड का विभाजन हुआ तथा प्रायद्वीपीय भारत के अतिरिक्त दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ है।
- भारत का भूगर्भिक इतिहास आद्य कल्प (Archean Era) से लेकर वर्तमान के नवीन नवजीवी कल्प (Quaternary Era) तक विस्तृत है। अतः इसमें कई क्रमों (Systems) की शैलें पाई जाती हैं। इन्हें मुख्यतः चार वर्गों में बांटा जाता है।

1. आद्य महाकल्प आर्कियन समूह की चट्टानें

- (1) आद्यक्रम की चट्टानें
(2) धारवाड़ क्रम की चट्टानें

2. पुराण समूह की चट्टानें

- (1) कुडप्पा क्रम और विंध्यन क्रम की चट्टानें

3. द्रविड़ कल्प (Dravid Era)

4. आर्यन क्रम की चट्टानें

1. **आद्य कल्प (Archean Era)** - इस कल्प की शैलों को दो प्रमुख उपभागों में विभक्त किया जाता है-

(A) आद्यक्रम की शैलें (Archean System)

इस क्रम की शैलें अत्यन्त प्राचीन व खेदार शैलें हैं जिनमें जीवावशेषों का अभाव पाया जाता है। इस क्रम की शैलों के तीन प्रमुख क्षेत्र हैं- (क) बंगाल नाइस, (ख) बुन्देलखण्ड नाइस तथा (ग) नीलगिरि नाइस।

(B) धारवाड़ क्रम की शैलें (Dharwar System)

आद्य क्रम की शैलों के ऊपर धारवाड़ क्रम की शैलें मिलती हैं। कुछ स्थानों में इन दोनों क्रमों की शैलें पास - पास भी पाई जाती हैं। आद्यक्रम की शैलें बनने के बाद उनका

कायान्तरण तथा अपरदन होता रहा। अपरदित पदार्थों के निक्षेप से तलछट शैलों की रचना हुई। यही धारवाड़ क्रम की प्राचीनतम तलछट शैलें हैं। दीर्घ भूगर्भिक इतिहास में इनका भी कायान्तरण हुआ है। ये शैलें मुख्यतः (क) मैसूर-धारवाड़-बल्लारी क्षेत्र, (ख) छोटा नागपुर के पठारी क्षेत्र, (ग) राजस्थान में अरावली क्षेत्र, (घ) पंजाब तथा (ण) उपहिमालय के कुछ क्षेत्रों में मिलती हैं। इस क्रम की शैलों में न केवल धात्विक खनिज बल्कि संगमरमर जैसी कायान्तरित शैलें भी पाई जाती हैं।

2. पुराण कल्प (Purana Era) - इस कल्प की शैलों को भी दो उपभागों में बांटा गया है।

(A) कुडप्पा क्रम की शैलें (Cudappah System) -

आद्यक्रम तथा धारवाड़ क्रम की शैलों के अपरदित पदार्थों का निक्षिप्त रूप कालान्तर में परतदार शैलों का रूप धारण करता गया। इनका काफी अंश कायान्तरण की लम्बी प्रक्रिया से गुजर चुका है। इनको कुडप्पा क्रम की संज्ञा दी गई है। इनमें स्लेट, क्वार्ट्ज़ाइट तथा चूने के पत्थर के जमाव मिलते हैं। इस क्रम की शैलें अधिकांशतः कृष्णा व पेन्नर नदियों के मध्य स्थित श्रेणी, कुडप्पा (पापकनी नदी) की घाटी, नल्लामलाई तथा वेनीकोण्डा, पर्वतश्रेणियों, गोदावरी घाटी, दिल्ली क्रम तथा कश्मीर के कई क्षेत्रों में पाई जाती हैं।

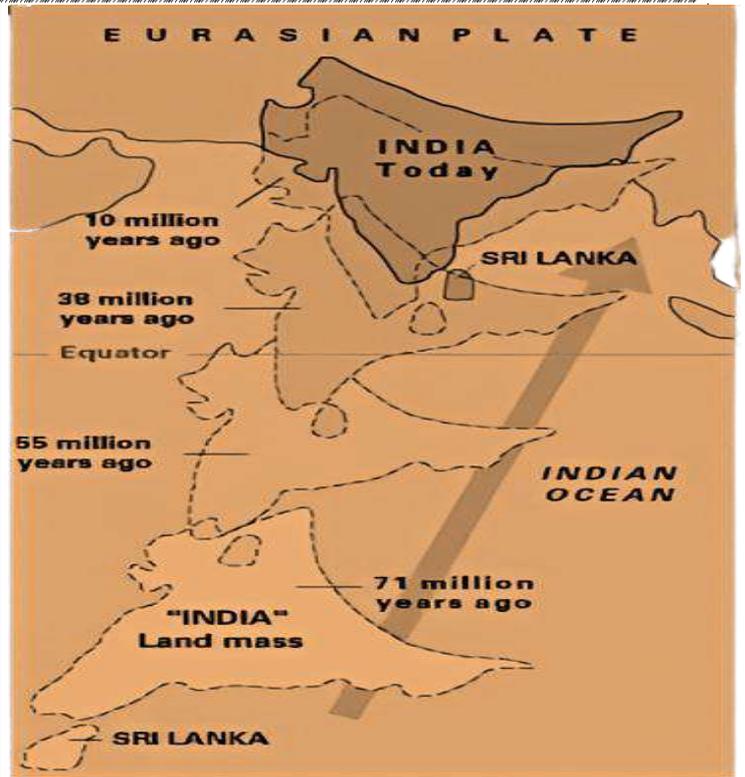
(B) विन्ध्ययन क्रम की शैलें (Vindhayayan System)- इस क्रम की अधिकांश शैलें विन्ध्याचल पर्वत के सहारे स्थित हैं। इस क्रम की शैलें कुडप्पा क्रम की शैलों के ऊपर मिलती हैं। इनका विस्तार बिहार के सासाराम एवं रोहतास क्षेत्रों से लेकर अरावली में चित्तौड़गढ़ से होते हुए विन्ध्याचल पर्वतों तक पाया जाता है। इन शैलों में बालुका पत्थर, शेल, क्वार्ट्ज़ाइट व चूना पत्थर मिलते हैं। इसी क्रम में पन्ना, अनन्तपुर एवं गोलकुण्डा के हीरे भी प्राप्त होते हैं। इस क्रम में विभिन्न रंगों के बालुका पत्थर तथा सीमेन्ट बनाने के काम में आने वाला चूना पत्थर मिलता है।

प्रश्न:- निम्नलिखित में से कौन सी पहाड़ियाँ राजस्थान में विन्ध्ययन पर्वत श्रेणियों का विस्तार हैं ?

- (1) मुकन्दरा पहाड़ियाँ (2) डोरा पर्वत
(3) अलवर पर्वत (4) गिरवा पर्वत (1)

3. द्रविड़ कल्प (Dravid Era)- इस कल्प में गौण्डवाना क्रम की शैलें पाई जाती हैं। इनका विस्तार अधिकांशतः दामोदर घाटी, महानदी घाटी, गोदावरी घाटी, सतपुड़ा श्रेणी, राजमहल पहाड़ी, कच्छ, काठियावाड़, पश्चिमी राजस्थान, कश्मीर, स्पीति आदि में है। इन शैलों का अधिकांश विस्तार दक्षिणी भारत में है।

4. आर्य कल्प (Aryan Era)- इस कल्प की शैलों का निर्माण कार्बोनिफ़ेरस युग से प्रारम्भ हुआ। अतः इन शैलों का कार्बनिक खनिज अर्थात् कोयला, खनिज तेल व प्राकृतिक गैस की दृष्टि से अत्यधिक महत्व है। इस क्रम की शैलें नवीनतम शैलें हैं।



भारत का भौतिक विभाजन -

भारत एक विशाल भू-भाग है जिसका निर्माण अलग-अलग भू-गर्भीय काल के दौरान हुआ है भू-गर्भीय निर्माणों के अलावा इस विशाल भू-भाग पर अपक्षय अपरदन तथा निक्षेपण का प्रभाव है।

भारत को भौतिक विभाजन के दृष्टीकोण से 6 भागों में बाँटा जा सकता है-

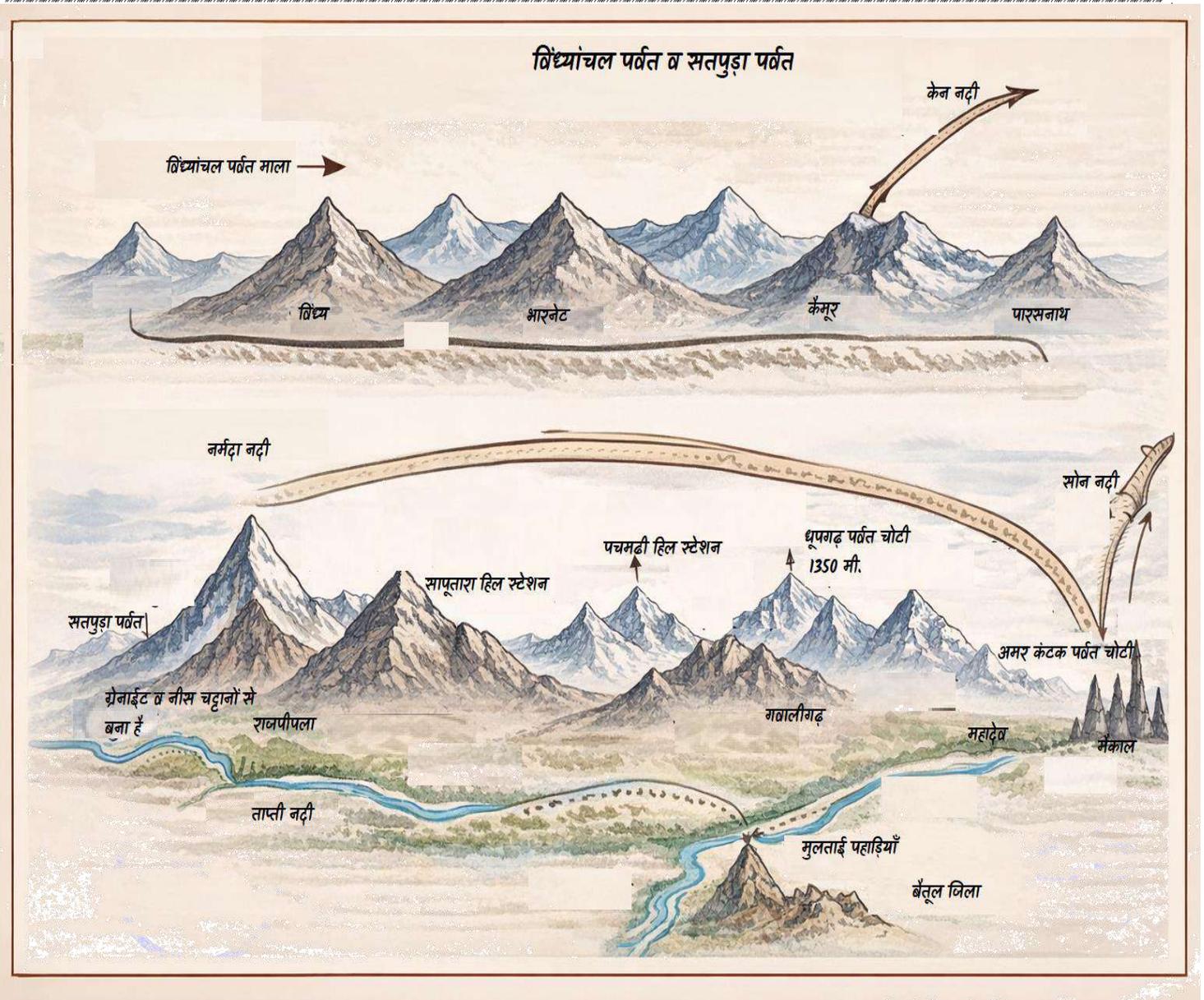
1. उत्तर भारत का पर्वतीय क्षेत्र
2. प्रायद्वीपीय पठार
3. मध्यवर्ती विशाल मैदान
4. तटवर्ती मैदान
5. द्वीप समूह
6. थार का मरुस्थल

1. उत्तर भारत का विशाल पर्वतीय क्षेत्र

• पर्वत

हिमालय का विस्तार व स्थिति

- हमारे देश की उत्तरी सीमा पर हिमालय पर्वत पश्चिम से पूर्व की ओर एक वृहत् चाप के रूप में 5 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है।
- लम्बाई = 2500 किलोमीटर
- चौड़ाई = 400 किलोमीटर (जम्मू कश्मीर व लद्दाख में) = 160 किलोमीटर (मध्यवर्ती भाग में) = 20-25 किलोमीटर (पूर्वी हिमालय में)
- ऊँचाई = उत्तरी हिमालय औसतन 5000-6000 मीटर = मध्य हिमालय औसतन 1800- 3000 मीटर = शिवालिक हिमालय औसतन 1200- 1800 मीटर



पश्चिमी घाट :-

- कुल लंबाई - 1600 किमी.
- औसत ऊँचाई - 1200मी.
- यह भारत की सबसे लंबी पर्वतमाला है ।

विशेषता

1. पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग कम चौड़ाई में है जबकि दक्षिणी भाग अधिक चौड़ाई में है ।
2. पश्चिमी घाट के पश्चिमी भाग में अधिक वर्षा होने के कारण यहाँ सर्वाधिक जैव विविधता मिलती है जबकि पश्चिमी घाट का पूर्वी भाग वृष्टि छाया प्रदेश में आता है।
3. इसके पश्चिमी भाग का ढाल तीव्र है जबकि पूर्वी भाग का ढाल मन्द है।
4. इसको सहयाद्री भी कहते हैं तथा इसे तीन भागों में विभाजित करते हैं

प्रश्न:- भारत में निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र जैव विविधता तप्त स्थल है?

- | | |
|----------------|-------------------|
| (1) सुंदरबन | (2) पश्चिमी घाट |
| (3) पूर्वी घाट | (4) गंगा के मैदान |

(A) उत्तरी सहयाद्री :- विस्तार - ताप्ती नदी से 16° उत्तरी अक्षांश तक ।

प्रमुख चोटियाँ कलसुबाई - 1646मी., सलहर -1567मी., महाबलेश्वर -1438मी. यह सभी महाराष्ट्र में स्थित है ।

(B) मध्य सहयाद्री :- विस्तार-16°3' अक्षांश से नीलगिरी तक राज्य- गोवा, कर्नाटक

प्रमुख चोटियाँ कुद्रेमुख 1892 मी. पुष्पागिरि- 1714मी. यह सभी कर्नाटक में स्थित है।

(C) दक्षिणी सहयाद्री :-

विस्तार-नीलगिरी-कन्याकुमारी राज्य- केरल, तमिलनाडु

अनाईमुडी - केरल (2695मी.) यह प्रायद्वीपीय पठार की सबसे ऊँची चोटी है ।

पश्चिमी घाट के दर्रे:-

भोर घाट:- यह महाराष्ट्र में स्थित है जो पुणे को कोलकाता से जोड़ता है।

पाल घाट:- यह केरल राज्य में स्थित है यह दर्रा कोच्चि को कोयम्बटूर से जोड़ता है ।

अध्याय - 5

प्रमुख नदियाँ एवं झीलें

भारत नदियों का देश है। भारत के आर्थिक विकास में नदियों का महत्वपूर्ण स्थान है। नदियाँ यहाँ आदिकाल से ही मानव की जीविकोपार्जन का साधन रही हैं।

- भारत में 4000 से भी अधिक छोटी व बड़ी नदियाँ हैं, जिन्हें 23 वृहत् तथा 200 लघु नदी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।
- किसी नदी के रेखीय स्वरूप को प्रवाह रेखा कहते हैं। कई प्रवाह रेखाओं के योग को प्रवाह संजाल (Drainage Network) कहते हैं।

अपवाह व अपवाह तंत्र (Drainage and Drainage System)

निश्चित वाहिकाओं (Channels) के माध्यम से हो रहे जल प्रवाह को अपवाह (Drainage) तथा इन वाहिकाओं के जाल को अपवाह तंत्र (Drainage System) कहा जाता है।

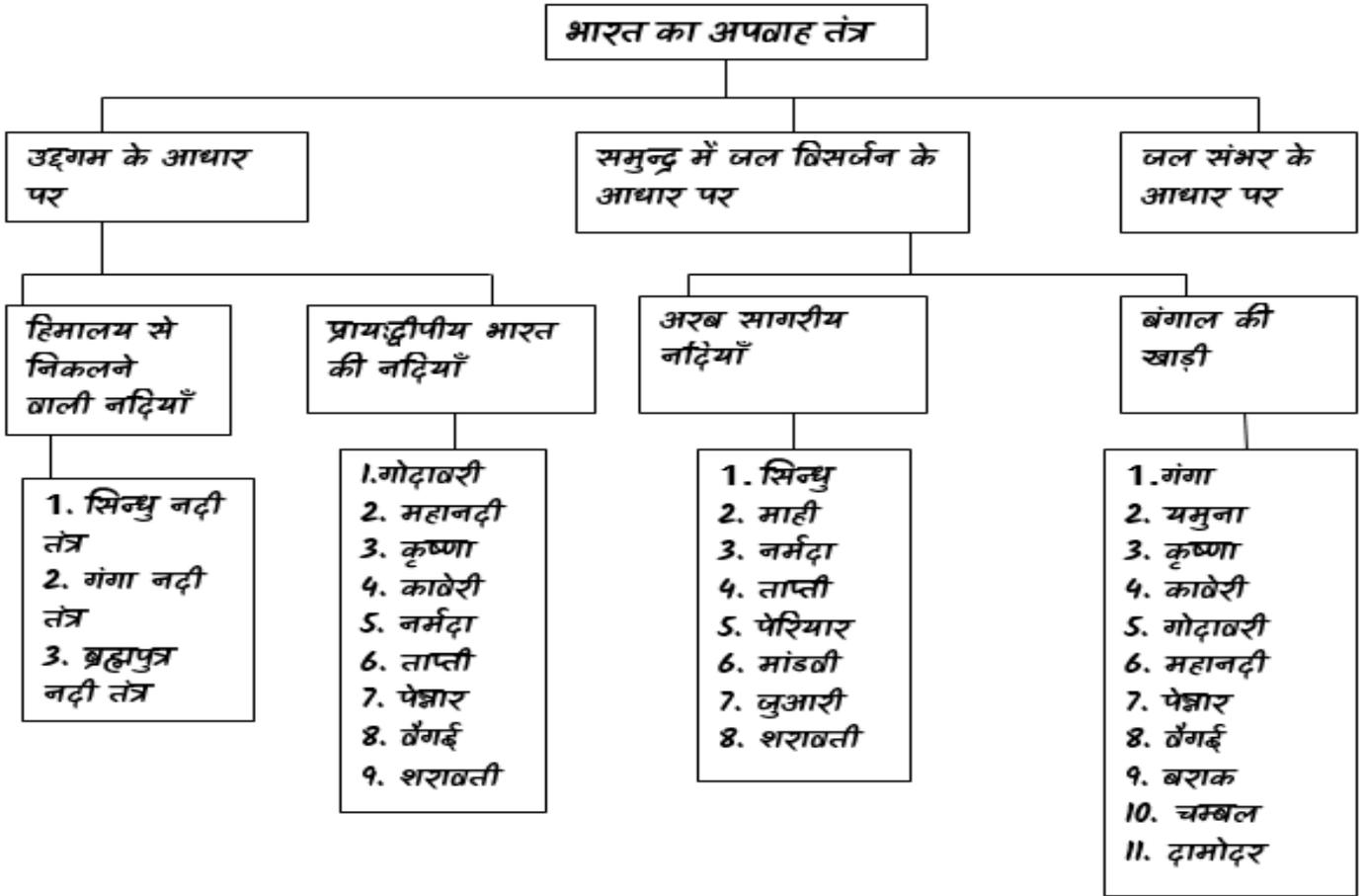
जलग्रहण क्षेत्र (Catchment Area)-

एक नदी विशिष्ट क्षेत्र से अपना जल बहाकर लाती है जिसे जलग्रहण क्षेत्र कहते हैं।

अपवाह द्रोणी -

एक नदी व उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को अपवाह क्षेत्र कहते हैं।

भारत का अपवाह तंत्र



जल संभर क्षेत्र / Watershad area

जल संभर क्षेत्र के आकार के आधार पर भारतीय अपवाह श्रेणियों को तीन भागों में बाँटा गया है

1. **प्रमुख नदी श्रेणी:** जिनका अपवाह क्षेत्र 20000 वर्ग किलोमीटर से अधिक है। इसमें 14 नदियाँ श्रेणियाँ शामिल हैं। जैसे - गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, तापी, नर्मदा, माही, पेन्नार, साबरमती, बराक आदि।
2. **मध्यम नदी श्रेणी:** जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 से 20,000 वर्ग किलोमीटर के बीच है। इसमें 44 नदी श्रेणियाँ हैं, जैसे - कालिंदी, पेरियार, मेघना आदि।

3. **लघु नदी श्रेणी:** जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 वर्ग किलोमीटर से कम है। इसमें न्यून वर्षा के क्षेत्रों में बहने वाली बहुत सी नदियाँ शामिल हैं।

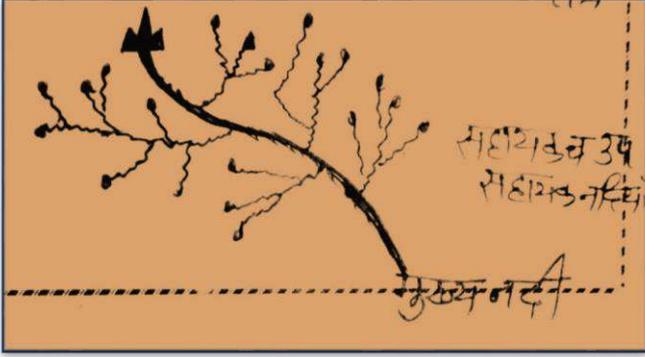
अपवाह प्रवृत्ति

1. **पूर्ववर्ती अथवा प्रत्यानुवर्ती अपवाह** - वे नदियाँ, जो हिमालय पर्वत के निर्माण के पूर्व प्रवाहित होती थी तथा हिमालय के निर्माण के पश्चात् महाखण्ड बनाकर अपने पूर्व मार्ग से प्रवाहित होती हैं। जैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र, सतलुज, सिन्धु।
2. **अनुवर्ती नदियाँ** - वे नदियाँ, जो सामान्य ढाल की दिशा में बहती हैं। प्रायद्वीपीय भारत की अधिकतर नदियाँ अनुवर्ती नदियाँ हैं।

3. **परवर्ती नदियाँ** - चम्बल, सिंध, बेतवा, सोन आदि नदियाँ गंगा और यमुना में जाकर समकोण पर मिलती हैं। गंगा अपवाह तंत्र के परवर्ती अपवाह का उदाहरण है।

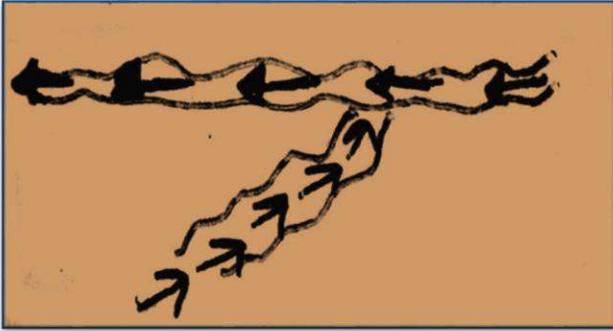
4. **दुमाकृतिक अपवाह** -

- वह अपवाह जो शाखाओं में फैला हो, जो द्विभाजित हो तथा वृक्ष के समान प्रतीत हो उसे दुमाकृतिक अपवाह कहते हैं।

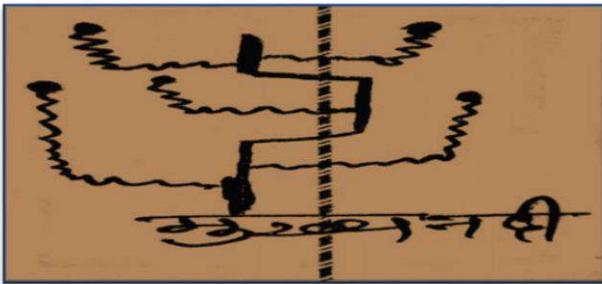


5. **जालीनुमा अपवाह** - यह एक आयताकार प्रतिरूप है। जहाँ मुख्य नदियाँ एक दूसरे के समान्तर बहती हैं और सहायक नदियाँ समकोण पर पायी जाती हैं।

6. **कंटकीय प्रतिरूप** - जब नदी के ऊपरी भाग में ऐसी सहायक जलधाराएँ मिलती हैं, जिनकी प्रवाह की दिशा मुख्य नदी के विपरीत हुआ करती है, तो ऐसे प्रतिरूप कंटकीय प्रतिरूप (Thorny Pattern) कहलाता है। उदाहरण- सिन्धु एवं ब्रह्मपुत्र नदियाँ अपने ऊपरी भाग में इसका निर्माण करती हैं।



7. **आयताकार अपवाह** - वह अपवाह प्रतिरूप, जिसकी विशेषता सहायक नदियों एवं मुख्य नदी के बीच समकोणीय घुमाव एवं समकोणीय सम्मिलन है।



8. **अरीय प्रतिरूप** - इस अपवाह प्रतिरूप में किसी केन्द्रीय स्थान से नदियों का बहिर्गमन होता है, इस प्रतिरूप में शीर्ष

भाग से नदियाँ निकलकर चारों दिशाओं में प्रवाहित होती हैं। उदाहरण - पारसनाथ की पहाड़ी, अमरकंटक की पहाड़ी



9. **वलयाकार प्रतिरूप** - इस प्रकार के अपवाह प्रतिरूप में, पर्वती नदियाँ अनुवर्ती नदी से जुड़ने से पहले वक्र अथवा चापाकार मार्ग से होकर गुजरती हैं। यह आंशिक रूप से भूमिगत वृत्ताकार संरचना के अनुकूलन का परिणाम है।

हिमालयी अपवाह तंत्र

- हिमालय से निकलने वाली नदियाँ बर्फ और ग्लेशियरों (हिमानी या हिमनद) के पिघलने से बनी हैं अतः इनमें पूरे वर्ष के दौरान निरन्तर प्रवाह बना रहता है। हिमालय की नदियों के बेसिन बहुत बड़े हैं एवं उनके जलग्रहण क्षेत्र सैकड़ों-हजारों वर्ग किमी. में फैले हैं। हिमालय की नदियों को तीन प्रमुख नदी-तंत्रों में विभाजित किया गया है।
- उत्तर भारत के अपवाह तंत्र में हिमालय का अधिक महत्त्व है।
- ये नदियाँ तीव्र गति से अपनी घाटियों को गहरा कर रही हैं।
- उत्तरी भारत की नदियाँ अपरदन से प्राप्त मिट्टी को बहाकर ले जाती हैं तथा मैदानी भागों में जल प्रवाह की गति मंद पड़ने पर मैदानों और समुद्रों में जमा कर देती हैं। इन्हीं नदियों द्वारा लायी गई मिट्टी से उत्तर भारत के विशाल मैदान का निर्माण हुआ है।
- इस क्षेत्र की नदियाँ बारहमासी हैं क्योंकि ये वर्षण एवं बर्फ पिघलने दोनों क्रियाओं से जल प्राप्त करती हैं। ये नदियाँ गहरे महाखण्डों से गुजरती हैं। जो हिमालय के उत्थान के साथ-साथ होने वाली अपरदन क्रिया द्वारा निर्मित हैं।

प्रश्न:- निम्न वक्तव्यों पर विचार कर सही उत्तर का चयन कीजिए :

कथन (A) : हिमालय से निकलने वाली नदियाँ सतत वाहिनी हैं।

कारण (R) : हिमालयन नदियों का उद्गम स्रोत हिमानियों में स्थित है।

(1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की पुष्टि करता है।

(2) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की पुष्टि नहीं करता है।

(3) (A) सही है और (R) गलत है

(4) (A) गलत है और (R) सही है

उत्तर :- b

इंडो ब्रह्म नदी:- भू-वैज्ञानिक मानते हैं, कि **मायोसीन** कल्प में लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाखों वर्ष पहले एक विशाल नदी थी। जिसे शिवालिक या इंडो - ब्रह्म नदी कहा गया है।
इंडो ब्रह्म नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र -

1. पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ
2. मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

3. पूर्व में ब्रह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

सिन्धु नदी तंत्र



यह विश्व की सबसे बड़ी नदी श्रेणियों में से एक है, जिसका क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km है। भारत में इसका क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी है।

- सिन्धु नदी की कुल लंबाई 2,880 किमी. है। परंतु भारत में इसकी लम्बाई केवल 1,114 km है। भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे पश्चिमी नदी है।
- सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में स्थित कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक ग्लेशियर (हिमनद) से होता है। तिब्बत में इसे शेर मुख अथवा सिंगी खंबान कहते हैं।
- सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।
- अन्य सहायक नदियाँ - जास्कर, स्यांग, शिगार, गिलगिट, श्योक, हुंजा, कुर्रम, नुबरा, गास्टिंग व दास, गोमल।
- अंततः यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती है। जहाँ दाहिने तट पर काबुल, तोची, गोमल, विबोआ और संगर नदियाँ इसमें मिलती हैं।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती है। पंचनद नाम पंजाब की

पाँच मुख्य नदियों सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया है।

सिन्धु की प्रमुख सहायक नदियाँ :-

1. सतलुज नदी
2. व्यास नदी
3. रावी नदी
4. चिनाब नदी
5. झेलम नदी

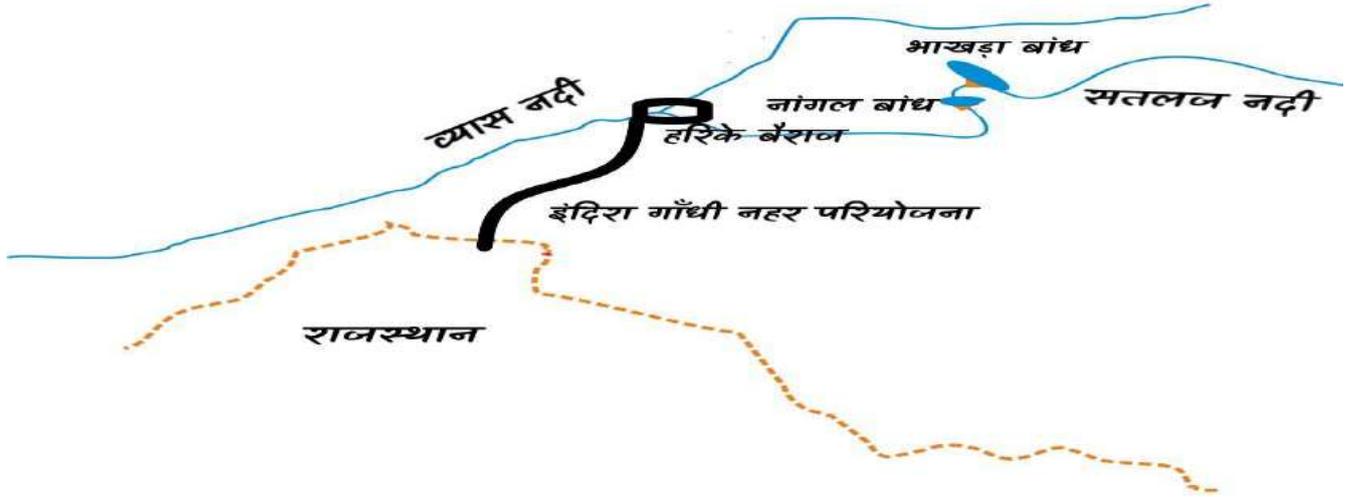
सिन्धु नदी तंत्र

सिन्धु जल संधि (1960)

तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलुज का नियंत्रण भारत तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चिनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया -

- | | |
|------------------------|--------------------|
| 1. व्यास, रावी, सतलुज | 80% पानी भारत |
| | 20% पानी पाकिस्तान |
| 2. सिन्धु, झेलम, चिनाब | 80% पानी पाकिस्तान |
| | 20% पानी भारत |

सतलुज नदी -



यह एक पूर्ववर्ती नदी है जो तिब्बत में लगभग 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर के निकट राक्षस ताल झील से निकलती है। जहाँ इसे **लॉगचेन खंबाब** के नाम से जाना जाता है।

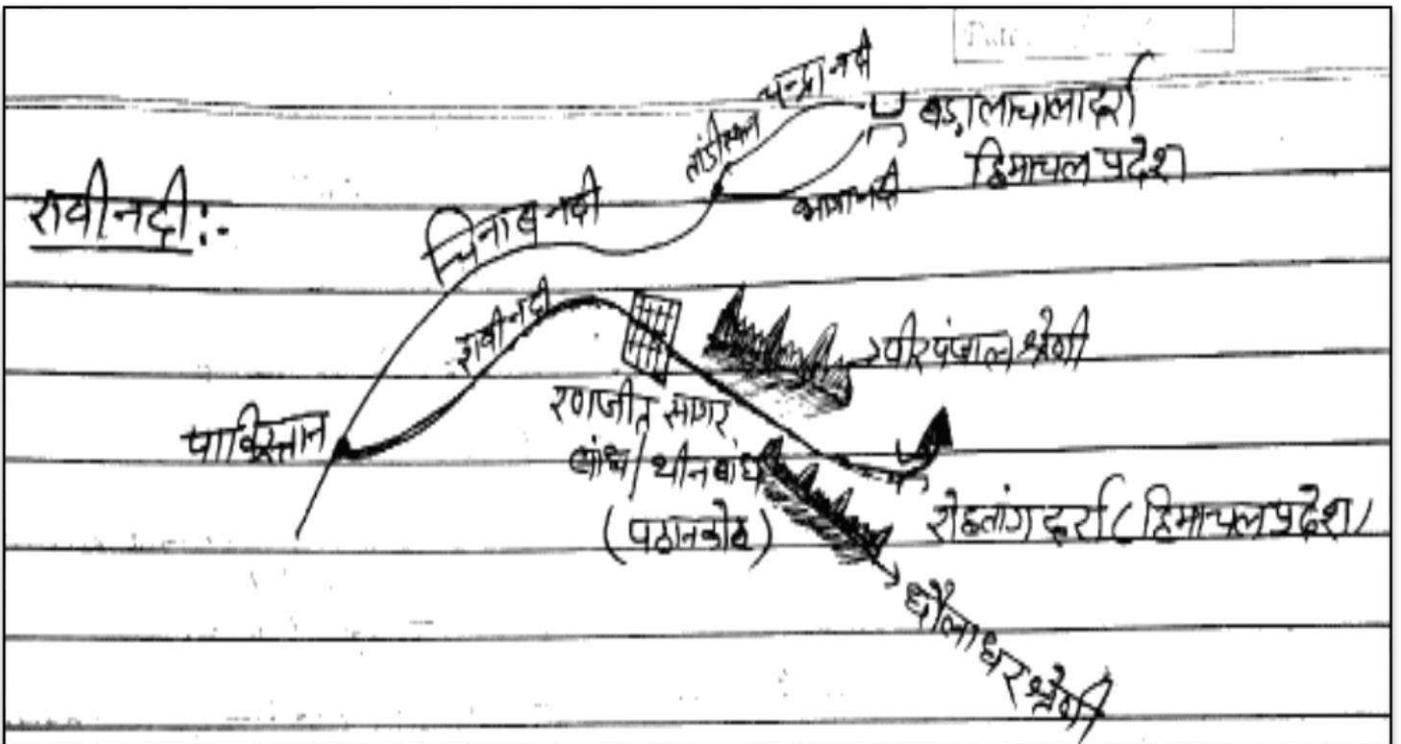
- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए इंडो - तिब्बत सीमा के समीप **शिपकी ला दर्रे** के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहते हुए अंत में चिनाब नदी में मिल जाती है।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- सतलुज, सिन्धु नदी की महत्वपूर्ण सहायक नदी है।

- इस नदी पर हिमाचल प्रदेश में नाथपा झाकड़ी परियोजना तथा भाखड़ा बाँध व इसके पीछे गोविन्द सागर जलाशय तथा पंजाब के रोपड़ में नांगल बाँध बना हुआ है।

व्यास नदी (विपाशा नदी)

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्वपूर्ण सहायक नदी है। रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड से निकलती है।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- यह नदी कुल्लू घाटी से गुजरती है। तथा धौलाधर श्रेणी में काती और लारगी में महाखण्ड का निर्माण करती है।
- यह पंजाब के मैदान में प्रवेश करती है जहाँ हरिकेश बैराज के पास सतलुज नदी में जा मिलती है।

रावी नदी (परुष्णी नदी)



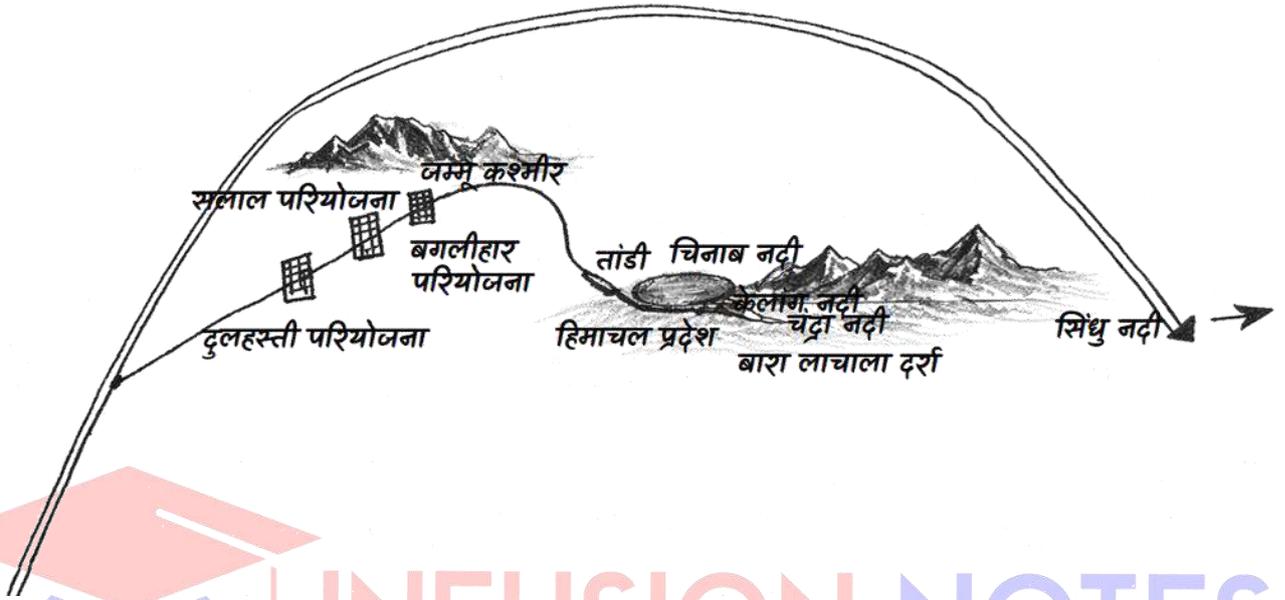
यह नदी सिन्धु की अन्य महत्वपूर्ण सहायक नदी है जो हिमालय की कुल्लू की पहाड़ियों में स्थित रोहतंग दर्रे के पश्चिम से निकलती है तथा चंबा घाटी से होकर बहती है।

- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सराय सिन्धु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के दक्षिण-पूर्वी भाग व धौलाधर के बीच से प्रवाहित होती है।

- इस नदी पर पठानकोट(पंजाब) के निकट थीन बाँध / रणजीत सागर बाँध बना हुआ है।

चिनाब नदी (अस्किनी)

चिनाब नदी

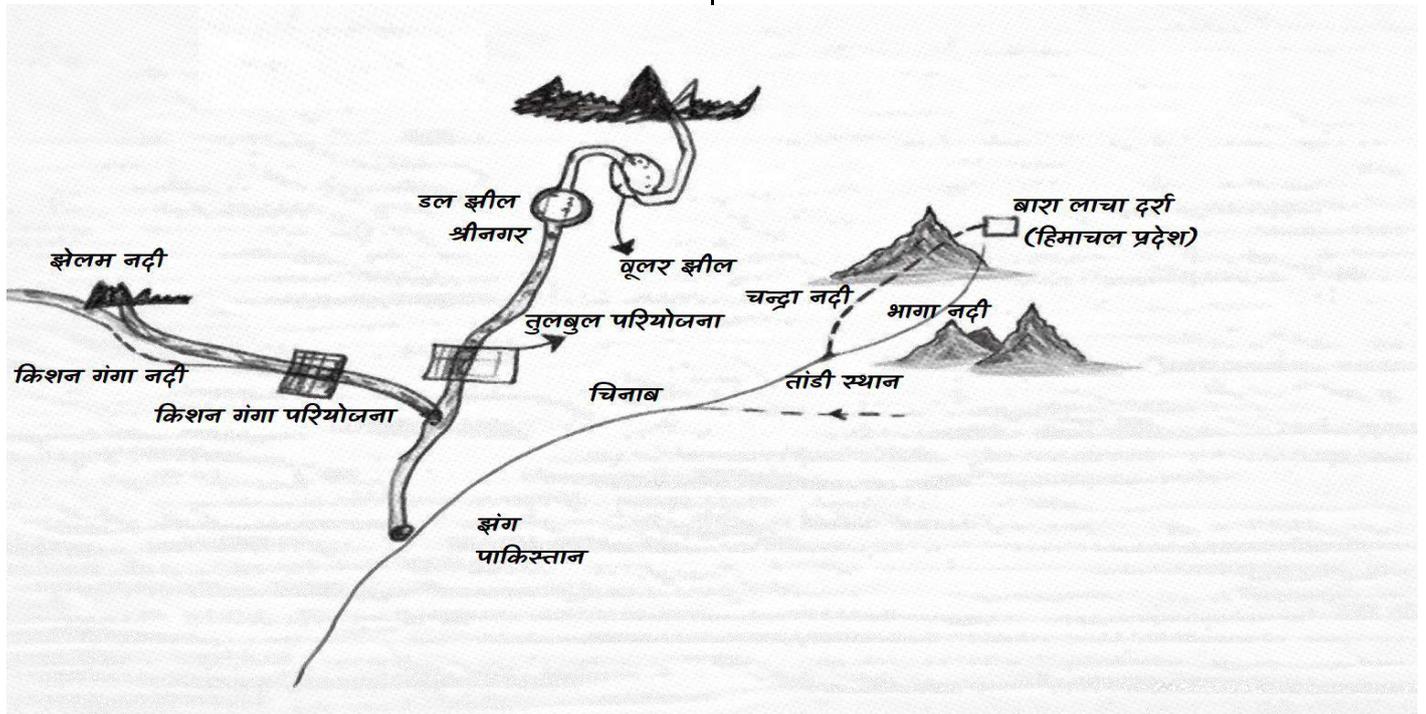


- यह सिन्धु की सबसे बड़ी सहायक नदी है।
- इसका उद्गम हिमाचल प्रदेश के निकट बड़ालाचला दर्रे से चंद्रा और भागा नामक दो सरिताओं के मिलने से होता है ये सरिताएँ हिमाचल प्रदेश में केलांग के निकट तांडी में आपस में मिलती हैं, इसलिए इसे चंद्रभागा के नाम से भी जाना जाता है।

- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले भारत में इस नदी का बहाव क्षेत्र 1,180 कि.मी. है।

- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर
- इस नदी पर जम्मू कश्मीर में बगलीहार परियोजना, दुलहस्ती परियोजना व सलाल परियोजना का निर्माण किया गया है।

इंजेलम नदी (वितस्ता)



राजस्थान का भूगोल

अध्याय - 1

राजस्थान - एक सामान्य परिचय

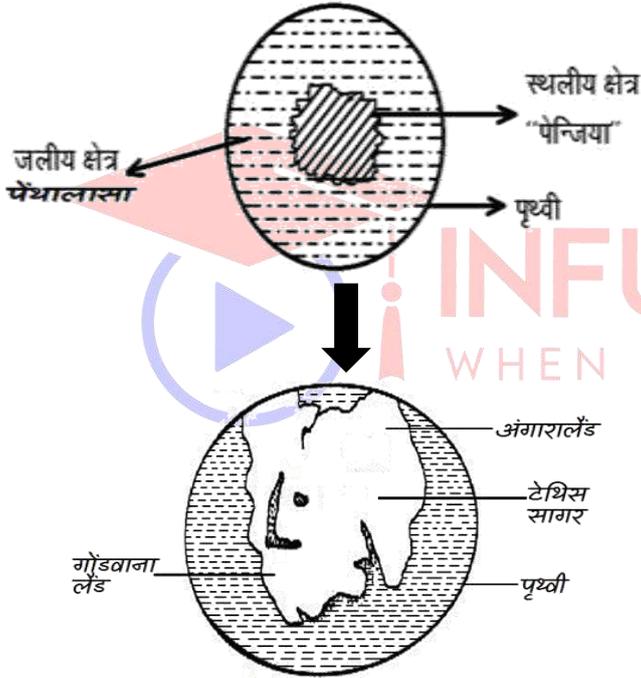
1. राजस्थान का सामान्य परिचय

प्रिय छात्रों, सामान्य परिचय के अंतर्गत हम राजस्थान के निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे-

- (क) राजस्थान की उत्पत्ति / निर्माण
- (ख) राजस्थान शब्द का उल्लेख
- (ग) राजस्थान की स्थिति
- (घ) राजस्थान का विस्तार (क्षेत्रफल, आकार, सीमा)

(क) राजस्थान की उत्पत्ति / निर्माण :-

(अल्फ्रेड वेगनर के महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के अनुसार)



- (क) पेंथिया
- (ख) पेंथालासा
- (ग) टेथिस सागर
- (घ) अंगारालैंड / लॉरेशिया
- (ङ) गोंडवानालैंड

नोट:- प्रिय छात्रों, कृपया ध्यान दें कि - आज से लाखों करोड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी दो भागों में विभाजित थी।

1. स्थल (पेंथिया)
2. जल (पेंथालासा)

- वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखें तो हमें यह कई भागों में विभाजित दिखाई देता है, जैसे सात महाद्वीप अलग - अलग हैं।

- उनके भी कई देश एक - दूसरे से काफी अलग अलग हैं लेकिन लाखों - करोड़ों वर्ष पूर्व संपूर्ण स्थलमंडल एक ही था।
- इसी स्थलीय क्षेत्र को "पेंथिया" के नाम से जानते थे तथा शेष बचे हुए भाग को (जल वाले क्षेत्र को) "पेंथालासा" के नाम से जानते थे।
- पेंथिया (स्थलीय क्षेत्र) सभी महाद्वीपों को संयुक्त रूप से पेंथिया कहा जाता है।
 - वर्तमान में दो भागों में विभक्त है।
 - ✓ अंगारालैंड / लॉरेशिया - उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया महाद्वीपों का निर्माण हुआ। इस स्थलीय क्षेत्र को "अंगारालैंड / यूरेशियन प्लेट" के नाम से जानते हैं।
 - ✓ गोंडवानालैंड - इसका दूसरा भाग (दक्षिणी भाग) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका महाद्वीपों का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को "गोंडवानालैंड" के नाम से जानते हैं।
- दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "टेथिस सागर" के नाम से जानते थे।
- विशेष नोट:- राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीलें "टेथिस सागर" के अवशेष हैं तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वतमाला) एवं दक्षिण पूर्वी पठारी भाग "गोंडवानालैंड" प्लेट के हिस्से हैं।
- टेथिस सागर- (एक भू सन्नति) टेथिस सागर को गोंडवानालैंड प्लेट और यूरेशियन प्लेट के मध्य स्थित एक सागर के रूप में कल्पित किया जाता है जो कि एक छिछला और संकरा सागर था, और इसी में जमा अवसादों के प्लेट विवर्तनिकी के परिणाम स्वरूप अफ्रीकी और भारतीय प्लेटों के यूरेशियन प्लेट के टकराने के कारण हिमालय और आल्प्स जैसे महान पहाड़ों की रचना हुई है।
- पेंथालासा - सभी महासागरों को संयुक्त रूप से पेंथालासा कहा गया।
- राजस्थान का निर्माण - गोंडवानालैंड एवं टेथिस सागर से हुआ है।
 - ✓ गोंडवानालैंड से - अरावली प्रायद्वीपीय (सबसे प्राचीनतम) भाग एवं हाड़ौती पठार का निर्माण हुआ।
 - ✓ टेथिस सागर से - मरुस्थलीय प्रदेश एवं पूर्वी मैदान (सबसे नवीनतम) निर्माण हुआ।
- नोट -** भारत के प्रायद्वीपीय पठार का हिस्सा - राजस्थान के अरावली प्रायद्वीपीय भाग एवं हाड़ौती पठार का निर्माण हुआ।
 - ✓ भारत के उत्तरी विशाल मैदान का हिस्सा - राजस्थान के मरुस्थलीय प्रदेश एवं पूर्वी मैदान निर्माण हुआ।
 - ✓ राजस्थान शब्द का अर्थ :- राजाओं का स्थान

(ख) राजस्थान शब्द का उल्लेख :-

- राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी-द्वय विक्रम संवत् 625 ई. में उत्कीर्ण बसंतगढ़ (सिरोही जिला) के शिलालेख में मिलता है।
- मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक “मुहणोत नैणसी” ने भी अपनी पुस्तक “नैणसी री ख्यात” में भी राजस्थान शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता।
- महर्षि वाल्मीकि ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए “मरुकान्तर” शब्द का उल्लेख किया है।
- जॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने सन् 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को “राजपूताना” शब्द कहकर पुकारा था। इस तथ्य का वर्णन विलियम फ्रैंकलिन ने अपनी पुस्तक “मिलिट्री मेमोरीज ऑफ मिस्टर थॉमस” में किया है।

जॉर्ज थॉमस का परिचय :-

- जॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे, जो कि 18 वीं सदी में भारत आए और 1798 से 1801 तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे।
- इन्होंने राजस्थान को “राजपूताना” शब्द इसलिए कहा क्योंकि मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन था। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र को “राजपूताना” कहा जाता था।

विलियम फ्रैंकलिन :-

- विलियम फ्रैंकलिन मूल रूप से लंदन के निवासी थे। यह जॉर्ज थॉमस के घनिष्ठ मित्र थे। उन्होंने 1805 ई. में जॉर्ज थॉमस के ऊपर “A Military Memories of Mr. George Thomas” नामक पुस्तक लिखी थी।
- अकबर के नवरत्नों में से एक मध्यकालीन इतिहासकार “अबुल फजल” ने इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए “मरुभूमि” शब्द का प्रयोग किया है।
- 1829 ईस्वी में “कर्नल जेम्स टॉड” ने अपनी पुस्तक “एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान” में सर्वप्रथम इस भू-भाग को राजस्थान, रायथान एवं रजवाड़ा नाम दिया था।

कर्नल जेम्स टॉड :-

- कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1822 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश एजेंट भी रहे।
- कर्नल जेम्स टॉड ब्रिटेन के मूल निवासी थे, उन्होंने अपने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें घोड़े वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है।
- कर्नल जेम्स टॉड को “राजस्थान के इतिहास का पितामह” कहा जाता है।
- कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान को “सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया” के नामक से भी जानते हैं।

- इस पुस्तक का पहली बार हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार “गौरीशंकर - हीराचंद ओझा” ने किया था। इसे हिंदी में “प्राचीन राजस्थान का विश्लेषण” कहते हैं।
- कर्नल टॉड सर्वेक्षण के सिलसिले में अजमेर और उदयपुर में कई जगह पर रहे थे- उनमें भीम नामक कस्बे में छोटा सा गाँव बोरसवाड़ा भी था- जो जंगलों और अरावली-पहाड़ों से घिरा हुआ है।
- उन्हें यह जगह पसंद आई तो उदयपुर के महाराजा भीम सिंह की सहमति से स्वयं के लिए बोरसवाड़ा में एक छोटा सा किला बनवा लिया।
- महाराज भीम सिंह ने कर्नल की सेवाओं से प्रभावित होकर गाँव का नाम टॉडगढ़ रख दिया, जो कालान्तर में टाडगढ़ कहलाने लगा। टाडगढ़ आज अजमेर जिले की एक तहसील का मुख्यालय है।
- कर्नल टॉड के किले में वर्तमान में सरकारी स्कूल चलता है।
- राजस्थान एकीकरण के चतुर्थ चरण (30 मार्च 1949) को वृहद् राजस्थान संघ में अधिकांश रियासतों के विलय हो जाने के कारण 30 मार्च को राजस्थान दिवस के रूप में मनाते हैं।
- राजस्थान को संवैधानिक रूप से राजस्थान नाम का दर्जा -26 जनवरी 1950 (p. सत्यनारायण राव समिति की सिफारिश पर)
- राजस्थान का वर्तमान स्वरूप (1 नवम्बर: 1956) को अस्तित्व में आया।
 - (1 नवम्बर 1956) को राजस्थान में 26 जिले थे।
 - (5) संभाग 1. जयपुर संभाग
 - 2. जोधपुर संभाग
 - 3. बीकानेर संभाग
 - 4. उदयपुर संभाग
 - 5. कोटा संभाग
- आज / वर्तमान राजस्थान में 41 जिले एवं 7 संभाग हैं।
- 26 वाँ जिला - अजमेर - 1 नवम्बर, 1956
- 27 वाँ जिला - धौलपुर - 15 अप्रैल, 1982, यह भरतपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- 28 वाँ जिला- बारां - 10 अप्रैल, 1991, यह कोटा से अलग होकर नया जिला बना।
- 29 वाँ जिला - दौसा - 10 अप्रैल, 1991, यह जयपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- 30 वाँ जिला राजसमंद - 10 अप्रैल, 1991, यह उदयपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- 31 वाँ जिला - हनुमानगढ़ - 12 जुलाई, 1994, यह श्रीगंगानगर से अलग होकर नया जिला बना।
- 32 वाँ जिला करौली 19 जुलाई, 1997, यह सर्वाइ माधोपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- 33 वाँ जिला - प्रतापगढ़ - 26 जनवरी, 2008,
- प्रतापगढ़ जिला तीन जिलों से अलग होकर नया जिला बना।

- ✓ चित्तौड़गढ़ - छोटीसादड़ी, आरनोद, प्रतापगढ़ तहसील
- ✓ उदयपुर - धारियाबाद तहसील
- ✓ बांसवाड़ा- पीपलखुट तहसील
- ✓ प्रतापगढ़ जिला परमेश चन्द कमेटी की सिफारिश पर बनाया गया ।
- ✓ प्रतापगढ़ जिले ने अपना कार्य 1 अप्रैल, 2008 से शुरू किया ।
- ✓ प्रतापगढ़ को प्राचीन काल में कांठल व देवला / देवलीया के नाम से जाना जाता था।

नए जिलों का निर्माण (34 से 50)

- निर्माण की घोषणा बजट 2022-23
- समिति रामलुभाया
- रामलुभाया समिति की सिफारिश पर घोषणा 17 मार्च 2023 (19 जिले एवं 3 संभाग)
- रामलुभाया समिति के सुझावों से मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 19 और नए जिलों बनाने की घोषणा की। इसके साथ ही राजस्थान में जिलों की संख्या 33 से बढ़कर 50 हो गयी तथा 3 नये संभाग बनाये गए जिससे संभागों की संख्या 7 से बढ़कर 10 हो गयी।

3 नए संभाग इस प्रकार हैं-

- बांसवाड़ा, पाली व सीकर
- अधिसूचना 5 अगस्त 2023
- प्रकाशित 6 अगस्त 2023
- लागू 7 अगस्त 2023

19 नए जिले निम्नलिखित हैं-

1. अनूपगढ़	2. फलोंदी
3. जोधपुर ग्रामीण	4. जोधपुर शहरी
5. बालोतरा	6. सांचौर
7. सलुम्बर	8. शाहपुरा
9. डीडवाना-कुचामन	10. नीम का थाना
11. कोटपुतली-बहरोड़	12. खैरथल-तिजारा
13. डीग	14. जयपुर शहर
15. जयपुर ग्रामीण	16. गंगापूर सिटी
17. दुदू	18. ब्यावर
19. केकड़ी	

वर्तमान स्थिति -

- नए जिलों के पुनर्गठन के सम्बन्ध में समिति का गठन -
- ✓ गहलोत सरकार में बने 19 जिले और 3 संभागों के फैसले पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश में जिलों के पुनर्गठन पर आईएस ललित के पंवार की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया।
- ✓ भजनलाल सरकार ने 12 जून को नये जिलों के रिव्यू के लिए कैबिनेट सब-कमेटी बनायीं जिसमें -
अध्यक्ष - डॉ. प्रेम चंद बैरवा (मदन दिलावर बाद में अध्यक्ष बनाये गए)

अन्य सदस्य -

1. राज्यवर्धन सिंह राठौड़ (उद्योग मंत्री)
3. हेमंत मीणा (राजस्व मंत्री)
2. कन्हैयालाल चौधरी (PHED मंत्री)
4. सुरेश सिंह रावत (जल संसाधन मंत्री)
- 28 दिसंबर 2024 को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में 9 जिलों और 3 संभागों को निरस्त करने की घोषणा की ।
- 29 दिसम्बर 2024 को जारी अधिसूचना के अनुसार वर्तमान में राजस्थान में 41 जिले व 7 संभाग हैं ।
- यथावत रखे जिले -

 1. बालोतरा
 2. ब्यावर
 3. डीग
 4. डीडवाना-कुचामन
 5. खैरथल-तिजारा
 6. कोटपुतली बहरोड़
 7. फलोंदी
 8. सलुम्बर

निरस्त किए गए जिले:

- अनूपगढ़
- जयपुर ग्रामीण
- जोधपुर ग्रामीण
- दुदू
- केकड़ी
- नीम का थाना
- गंगापूर सिटी
- सांचौर
- शाहपुरा

निरस्त किए गए संभाग:

- बांसवाड़ा
- पाली
- सीकर

वर्तमान राजस्थान में 41 जिले एवं 7 संभाग हैं ।

राजस्थान के 41 जिले

1. श्रीगंगानगर	2. हनुमानगढ़
3. बीकानेर	4. चूरू
5. जोधपुर	6. जैसलमेर
7. फलोंदी	8. बाड़मेर
9. जालोर	10. सिरोही
11. पाली	12. उदयपुर
13. डूंगरपुर	14. बांसवाड़ा
15. प्रतापगढ़	16. भीलवाड़ा
17. राजसमन्द	18. अजमेर
19. चित्तौड़गढ़	20. कोटा
21. बूंदी	22. बारां
23. झालावाड़	24. करौली

25. सवाई माधोपुर	26. टोक
27. भरतपुर	28. अलवर
29. नागौर	30. ब्यावर
31. बालोतरा	32. डीग
33. डीडवाना-कुचामन	34. खैरथल-तिजारा (नया नाम - भर्तृहरि नगर)

35. कोटपतली-बहरोड़	36. सलुम्बर
37. जयपुर	38. सीकर
39. झुंझुनू	40. चूरू
41. दौसा	



बालोतरा -

- बाड़मेर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला बालोतरा गठित किया गया है ।
- इस जिले में 9 तहसील (पचपदरा, कल्याणपुर, पाटोदी, सिवाना, समदड़ी, गिड़ा, सिणधरी, धोरीमन्ना, गुड़ामालानी) हैं।

डीडवाना-कुचामन -

- नागौर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला डीडवाना-कुचामन गठित किया गया है।
- इस जिले में 8 तहसील (डीडवाना, मौलासर, छोटी खाटू, लाडनू, परबतसर, मकराना, नावां, कुचामनसिटी) हैं।

डीग -

- भरतपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला डीग गठित किया गया है।

- इस जिले में 9 तहसील (डीग, जनथर, कुम्हेर, राह, नगर, सीकरी, कामां, जुरहरा, पहाड़ी) हैं।

फलोंदी :

- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला फलोंदी गठित किया गया है।
- इस जिले में 8 तहसील (फलोंदी, लोहावट, आऊ, देचू, सेतरावा, बाप, घंटियाली, बापिणी) हैं।
- इसमें जैसलमेर जिले की नोख तहसील का कुछ क्षेत्र शामिल किया गया है।

कोटपतली-बहरोड़

- **जिला मुख्यालय** - कोटपतली-बहरोड़
- जयपुर एवं अलवर जिलों का पुनर्गठन कर नया जिला कोटपतली-बहरोड़ गठित किया गया है ।
- कोटपतली-बहरोड़ जिले में 8 तहसील (बहरोड़, बानसूर, नीमराना, मांढण, नारायणपुर कोटपतली विराटनगर,

झुंझुने	-	झुंझुन
चुरा	-	चूर
कोट	-	कोटपूतली
अली	-	अलवर

नोट - वर्तमान में हरियाणा के साथ जयपुर और भरतपुर जिले सीमा नहीं बनाते हैं।

राजस्थान की सीमा से लगने वाले हरियाणा के जिले हैं।
“महेंद्र मेवा रेवड़ी भी सिरसा हिसार फतेह करके खाएगा”

सूत्र	जिला
महेंद्र	- महेंद्रगढ़
मेवा	- मेवात
रेवड़ी	- रेवाड़ी
भी	- भिवानी
सिरसा	- सिरसा
हिसार	- हिसार
फतेह	- फतेहाबाद



उत्तरप्रदेश (877 किमी^०)

- राजस्थान के तीन जिलों (डीग, भरतपुर, धौलपुर) की सीमा उत्तरप्रदेश के दो जिलों (मथुरा व आगरा) से लगती है।
- उत्तरप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा भरतपुर व न्यूनतम सीमा डीग की लगती है।
- उत्तरप्रदेश की सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भरतपुर व छोटा जिला डीग है।
- उत्तरप्रदेश राजस्थान के पूर्व दिशा में स्थित है।



मध्यप्रदेश (1600 किमी^०)

- राजस्थान की सर्वाधिक सीमा MP के साथ लगती है।
- राजस्थान के 10 जिलों (धौलपुर, प्रतापगढ़, सर्वाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, कोटा, झालावाड़, बारां, बांसवाड़ा, करौली) की सीमा मध्यप्रदेश के 10 जिलों की सीमा से लगती है। (झाबुआ, रतलाम, मंदसौर, निमच, अगरमालवा, राजगढ़, गुना, शिवपुरी, श्यांपुर, मुरैना) मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा झालावाड़ व न्यूनतम भीलवाड़ा की लगती है तथा सीमा के नजदीक मुख्यालय धौलपुर व दूर जिला मुख्यालय भीलवाड़ा है।
- मध्यप्रदेश राजस्थान की दक्षिण पूर्व दिशा में स्थित है।
- नीमच जिले के साथ राजस्थान की तीन दिशाओं से सीमा लगती है।



गुजरात (1022 किमी^०)

- राजस्थान के 6 जिलों (बाड़मेर, जालोर, सिरोही, उदयपुर, इंगरपुर, बाँसवाड़ा) की सीमा गुजरात के 6 जिलों से लगती है। (कच्छ, बनासकांठा, साबरकांठा, अरावली, माहीसागर, दाहोद) गुजरात के साथ सर्वाधिक सीमा उदयपुर व न्यूनतम सीमा बाड़मेर की लगती है तथा सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय इंगरपुर व दूर मुख्यालय बाड़मेर है।
- गुजरात सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला बाड़मेर व छोटा जिला इंगरपुर है।
- गुजरात राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम दिशा में स्थित है।

शोर्ट ट्रिक

गुजरात की सीमा से लगने वाले राजस्थान के जिले हैं।

- पृथ्वी के परिक्रमण काल में 22 दिसंबर को सूर्य की किरणें मकर रेखा पर लम्बवत् गिरती हैं इस के कारण पृथ्वी के दक्षिणी गोलार्द्ध में दिन बड़ा व रात छोटी एवं ग्रीष्म ऋतु होती है तथा उत्तरी गोलार्द्ध में दिन छोटा तथा रात बड़ी होती है।
- श्री गंगानगर राजस्थान में सबसे उत्तर में स्थित जिला है इसलिए 22 दिसंबर को राजस्थान में सूर्य की किरणें सर्वाधिक तिरछी श्रीगंगानगर जिले में पड़ती है सर्दियों में राजस्थान का सबसे ठंडा जिला चूरू है।
- सर्दियों में सिरोही जिले के माउंट आबू का तापमान हिमांक बिंदु से नीचे चला जाता है।
- राजस्थान में भूमध्य सागरीय (पश्चिमी) विक्षोभ के कारण जो वर्षा होती है उसे राजस्थान में मावठ के नाम से जानते हैं।
- राजस्थान के दक्षिण - पश्चिम, दक्षिण तथा दक्षिण - पूर्वी भागों में सर्दियों में प्रातः काल में तापमान की कमी के कारण "पाला" पड़ता है



अध्याय - 4

अपवाह तंत्र (नदियाँ, झीलें एवं बाँध)

अपवाह तंत्र -

- जब नदी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती है, तो उसे अपवाह तंत्र कहते हैं।
- अपवाह तंत्र में नदियाँ एवं उसकी सहायक नदियाँ शामिल होती हैं। जैसे गंगा और उसकी सहायक नदियाँ मिलकर एक अपवाह तंत्र बनाती हैं उसी प्रकार सिंधु और उसकी सहायक नदियाँ (झेलम, रावी, व्यास, चिनाब) मिलकर एक अपवाह तंत्र बनाती हैं। इसी तरह ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियाँ भी अपवाह तंत्र बनाती हैं।
- भारत की सबसे लंबी नदी गंगा है तथा सबसे बड़ा अपवाह तंत्र वाली नदी ब्रह्मपुत्र है।

अब हम अध्ययन करेंगे राजस्थान के अपवाह तंत्र के बारे में।

- राजस्थान में कई नदियाँ हैं जैसे लूनी, माही, बनास, चंबल। इसके अलावा यहाँ पर स्थित कई झीलें भी इस अपवाह तंत्र में शामिल होती हैं।
- राजस्थान में **अरावली पर्वतमाला** स्थित है, यह राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है इसलिए यह **राज्य की नदियों का स्पष्ट रूप से दो भागों में विभाजित करती है। इसके पूर्व में बहने वाली नदियाँ अपना जल बंगाल की खाड़ी में तथा इसके पश्चिम में बहने वाली नदियाँ अपना जल अरब सागर में लेकर जाती हैं।**
- राजस्थान के अपवाह तंत्र को हम दो भागों में विभक्त करते हैं -
 1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण
 2. संगम के आधार पर वर्गीकरण

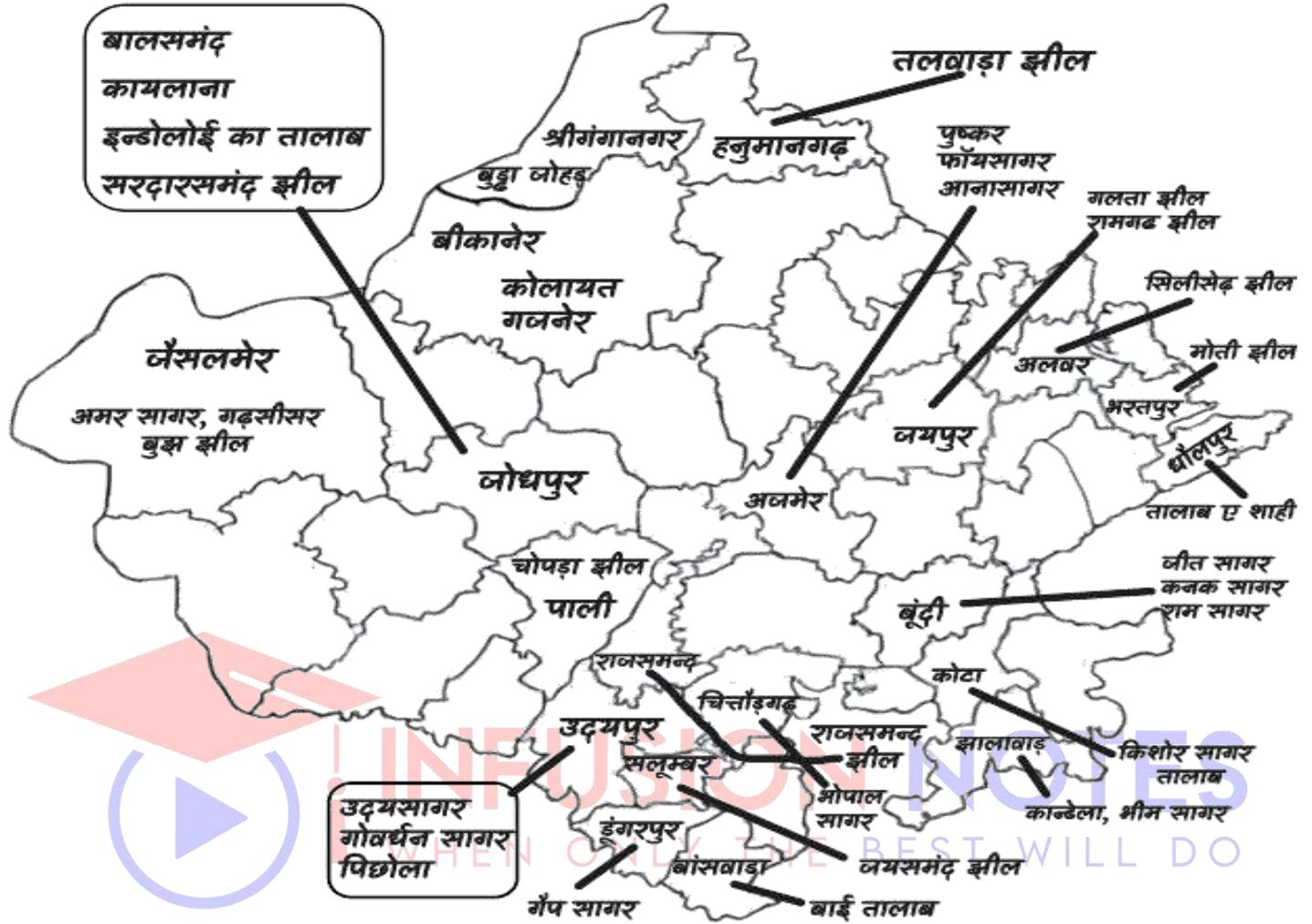
1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण को चार भागों में बाँटा गया है -

- (अ) **उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान-** इस तंत्र में लूनी, जवाई, सूकड़ी, बांडी, सागी जोजड़ी घग्घर, कातली नदियाँ शामिल होती हैं।
 - (ब) **दक्षिण व पश्चिमी राजस्थान -** इसमें पश्चिमी बनास, साबरमती, वाकल, व सेई नदियाँ शामिल होती हैं।
 - (स) **दक्षिणी राजस्थान -** इसमें माही, सोम, जाखम, अनास मोरेन नदियाँ शामिल होती हैं।
 - (द) **दक्षिण - पूर्वी राजस्थान -** इसमें चंबल, कुनु, पार्वती, कालीसिंध, कुराल, आहू, नेवज, परवन, मेज, गंभीरी, छोटी कालीसिंध, ढीला, खारी, माशी, कालीसिल, मोरेल, डाई, सोहादरा आदि नदियाँ शामिल होती हैं।
- 2. संगम के आधार पर वर्गीकरण -** इसी आधार पर नदियों को तीन भागों में बाँटा गया है

- फलोदी झील, बाप झील- फलोदी जिले में स्थित हैं। इस झील में राज्य का पहला कोयला संयंत्र स्थापित किया गया है।
- कावोद झील जैसलमेर में स्थित है।

- पोकरण झील जैसलमेर में स्थित है।
- कुचामन झील डीडवाना-कुचामन में स्थित है।

राजस्थान में मीठे पानी की झीलें -



शोर्ट ट्रिक

राजस्थान की मीठे पानी की झीलों के नाम:-
“जयराज, अना, नडीसि कोका फतेह कर”

सूत्र	झीलें
जय	- जयसमन्द झील
राज	- राजसमन्द झील
अना	- अनासागर झील
न	- नक्की झील
डी	- डीडवाना झील
सि	- सिलिसेढ झील
को	- कोलायत झील
का	- कायलाना झील
फतेह	- फतेहसागर झील

विस्तृत वर्णन -

1. पुष्कर झील -

- राजस्थान राज्य के अजमेर जिले के पुष्कर नामक स्थान पर (अजमेर शहर से 11 किलो मीटर दूर) स्थित पुष्कर झील एक प्रसिद्ध झील है।

- ऐसा माना जाता है कि इस झील का निर्माण पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा करवाया गया था इसलिए इस झील का नाम "पुष्कर झील" पड़ा, लेकिन भौगोलिक मान्यताओं के अनुसार इस झील का निर्माण ज्वालामुखी से हुआ है इसलिए इसे क्रेटर झील भी कहा जाता है।
- यह राजस्थान की प्राचीन, प्राकृतिक एवं सबसे पवित्र झील है।
- इस झील के किनारे प्रसिद्ध ब्रह्माजी का मंदिर स्थित है ऐसा माना जाता है कि ब्रह्माजी मंदिर में मूर्ति आद्यगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित की गई थी। इस मंदिर का निर्माण दसवीं सदी में पंडित गोकुल चंद पारीक ने करवाया था। (नोट :- राजस्थान के बालोतरा जिले में आसोतरा नामक स्थान पर एक अन्य ब्रह्माजी का मंदिर है।)
- इस झील को अन्य नामों से भी जाना जाता है, जैसे - कोकण तीर्थ, तीर्थ स्थलों का मामा 52 घाट मंदिरों की नगरी, प्रयागराज का गुरु, हिन्दुओं का पांचवा तीर्थ स्थल इत्यादि।
- इस झील के किनारे कार्तिक मास की पूर्णिमा को मेला लगता है। यह मेला राजस्थान का सबसे बड़ा रंगीन मेला

c. अल्फीसोल्स

3. उप-आर्द्र एवं आर्द्र

d. वर्टीसोल्स

4. आर्द्र एवं अति आर्द्र

कूट	a	b	c	d
A.	1	3	4	2
B.	1	2	3	4
C.	1	3	2	4
D.	4	1	2	3

उत्तर - b

4. निम्न में से किस प्रकार की मिट्टी में स्वयं जुताई का गुण पाया जाता है?

a. काली मिट्टी

b. जलोढ़

b. शुष्क मिट्टी

d. लेटेराइट

उत्तर - A

अध्याय - 7

प्रमुख फसलें

इस अध्याय में हम राजस्थान में कृषि एवं पशुसंपदा का अध्ययन करेंगे। हम स्थायी तथ्यों के अलावा परिवर्तनशील वर्तमान आंकड़ों का भी अध्ययन करेंगे। हम कृषि तथा पशु संपदा का वर्तमान अर्थव्यवस्था में महत्त्व भी जानेंगे तथा इनसे संबंध क्षेत्रों का जो कि हमारी अर्थव्यवस्था में महत्त्व रखते हैं उनका भी अध्ययन करेंगे।

राजस्थान की कृषि

यहाँ हम कृषि कि विभिन्न पद्धतियों का अध्ययन करेंगे। जो कि निम्नलिखित हैं-

राजस्थान में कृषि पद्धतियों का वर्गीकरण-

मिश्रित कृषि

कृषि का वह रूप जिसमें पशुपालन व कृषि दोनों साथ- साथ की जाती है। मिश्रित कृषि कहलाती है।

खड़ीन कृषि- प्लाय झीलों में पालीवाल ब्राह्मणों के द्वारा की जाने वाली कृषि। प्लाय झीलों में 3 तरफ खेत के मिट्टी कि दीवार बनाकर ढलान पर वर्षा का जल एकत्र कर कृषि की जाती है। (सर्वाधिक- जैसलमेर)

ड्यूओं कल्चर- एक वर्ष में एक खेत में दो फसलों का उत्पादन।

ओलिगों कल्चर- एक वर्ष में एक खेत में तीन फसलों का उत्पादन।

रिले क्रॉपिंग कृषि- जब एक कृषि वर्ष में 4 बार फसलों का उत्पादन। (कृषि वर्ष 1 जुलाई से 30 जून)

स्थानांतरित कृषि- वनों को काटकर या जलाकर की जाने वाली कृषि को स्थानांतरित कृषि कहा जाता है।

- आदिवासियों द्वारा डूंगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़ एवं बाँसवाड़ा क्षेत्र में जंगल में आग लगाकर बची राख को फैलाकर वर्षा होने पर जो कृषि की जाती है। उसे **झूमिंग या स्थानांतरित कृषि** कहते हैं।
- यह कृषि कुछ वर्षों (प्रायः दो या तीन वर्ष) तक जब तक मृदा में उर्वरता बनी रहती है, इस भूमि पर खेती की जाती है।
- इसके पश्चात् इस भूमि को छोड़ दिया जाता है, जिस पर पुनः पेड़-पौधे उग आते हैं। अब अन्यत्र वन भूमि को साफ करके कृषि के लिये नई भूमि प्राप्त की जाती है और उस पर भी कुछ ही वर्ष तक खेती की जाती है।
- इस प्रकार झूम कृषि स्थानांतरित कृषि है, जिसमें थोड़े-थोड़े समयांतराल पर खेत बदलते रहते हैं।
- आदिवासियों में यह **वालरा** नाम से जानी जाती है। पहाड़ी क्षेत्रों की **वालरा** चिमाता एवं मैदानी क्षेत्रों की **वालरा** दजिया कहलाती है।

शुष्क कृषि (बारानी)-

- 50 सेमी. से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में वर्षा जल का सुनियोजित रूप से संरक्षण व उपयोग कर कम पानी की आवश्यकता वाली व शीघ्र पकने वाली फसलों की कृषि की जाती है।
- यह कृषि राज्यों के अधिकांश जिलों में की जाती है।

आर्द्र कृषि- 200 सेमी. से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में उपजाऊ कांप व काली मिट्टी पर उन्नत व व्यापारिक फसल प्राप्त की जाती है, वह आर्द्र कृषि कहलाती है।

- राज्य के बारां, झालावाड़, कोटा, बाँसवाड़ा, एवं चित्तौड़गढ़ में आर्द्र कृषि की जाती है।

सिंचित कृषि- यह कृषि राज्य के उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ सिंचाई के लिए जल नहरों, नलकूपों से लिया जाता है। जैसे हनुमानगढ़ व श्रीगंगानगर में नहरों का जल सुगमता से उपलब्ध हो जाता है।

- राज्य की लगभग 32 प्रतिशत कृषि भूमि पर वर्षा के अलावा अन्य स्रोतों से पानी देकर फसल तैयार की जाती है।
- यह 50 से 100 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्रों में की जाती है। अलवर, भरतपुर, डीग, खैरथल-तिजारा, करौली, सवाई माधोपुर, दौसा, भीलवाड़ा, अजमेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ आदि जिले इस क्षेत्र में आते हैं।

2. ऋतु के आधार पर

(i) खरीफ की फसलें

(अ) खरीफ की प्रमुख फसलें :- धान, मक्का, ज्वार, मूंग, मूंगफली, लोबिया, कपास, जूट, बाजरा, ग्वार, तिल, मोठ आदि हैं।

(ब) खरीफ की फसलों की बुवाई जून- जुलाई में और कटाई अक्टूबर महीने में की जाती है।

(ii) रबी की फसलें

(अ) रबी की प्रमुख फसलें:- जौ, राई, गेहूँ, जई, सरसों, मैथी, चना, मटर आदि हैं।

(ब) रबी की फसल की बुवाई अक्टूबर- नवंबर में तथा कटाई अप्रैल महीने में की जाती है।

(iii) जायद की फसलें

(अ) जायद की प्रमुख फसलों में तरबूज, खरबूजा, टिंडा, ककड़ी, खीरे, मिर्च आदि हैं।

(ब) जायद की फसल की बुवाई फरवरी- मार्च में तथा कटाई जून महीने में की जाती है।

3. उपयोग के आधार पर

(i) खाद्यान फसलें- राजस्थान की खाद्यान फसलें गेहूँ, चावल (धान), बाजरा, जौ, मक्का, ज्वार, दलहन, तिलहन प्रमुख हैं।

(ii) वाणिज्यिक फसलें- राजस्थान की वाणिज्यिक फसलें कपास और गन्ना हैं।

राजस्थान में खाद्यान्नों में गेहूँ, जौ, चावल, मक्का, बाजरा, ज्वार, रबी एवं खरीफ की दलहन फसलें शामिल हैं।

1. गेहूँ- राज्य में सर्वाधिक क्षेत्र में खाद्यान्न फसल के रूप में गेहूँ बोया जाता है।
 - गेहूँ को बोए जाने के समय तापमान कम से कम 8° से 10° से. तक होना चाहिए तथा पकने के समय तापमान 15° से 20° से. तक होना चाहिए।
 - 50- 100 सेमी. के बीच वर्षा की आवश्यकता होती है। राजस्थान में साधारण गेहूँ (ट्रीटिकम) एवं मैक्रोनी गेहूँ (लाल गेहूँ) सर्वाधिक पैदा होता है।
 - गेहूँ उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र पूर्वी एवं दक्षिणी- पूर्वी राजस्थान के जयपुर, अलवर, भरतपुर, डीग, खैरथल-तिजारा, करौली, सवाई माधोपुर, दौसा, भीलवाड़ा, अजमेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ आदि जिले हैं। राजस्थान में सर्वाधिक गेहूँ श्रीगंगानगर जिले में उत्पादित होता है इसलिए श्रीगंगानगर जिला अन्न का भण्डार कहलाता है।
 - नाइट्रोजन युक्त दोमट मिट्टी, महीन कांप मिट्टी व चीका (चीकनी) प्रधान मिट्टी गेहूँ उत्पादन हेतु उपयुक्त होती है। मिट्टी ph मान 5 से 7.5 के मध्य होना चाहिए।
 - राजस्थान में दुर्गापुरा-65, कल्याण सोना, मैक्सिकन, सोनेरा, शरबती, कोहिनूर, सोनालिका, गंगा सुनहरी, मंगला, कार्निया-65, लाल बहादूर, चम्बल-65, राजस्थान-3077 आदि किस्में बोई जाती हैं। गेहूँ में छाछया, करजवा, रतुआ, चंपा रोग पाए जाते हैं। इण्डिया मिक्स- गेहूँ, मक्का व सोयाबीन का मिश्रित आटा।
2. जौ- राजस्थान में जौ उत्पादन क्षेत्रफल लगभग 2.5 लाख हैक्टेयर है। भारत के कुल उत्पादन का 1/4 भाग राजस्थान में पैदा होता है। जौ शीतोष्ण जलवायु का पौधा है तथा रबी की फसल है।
 - जौ की बुवाई के समय लगभग 10°- 15° से. तापमान की आवश्यकता है तथा काटते समय 30° से 22° सेन्टीग्रेड तापमान होना चाहिए।
 - जौ के लिए शुष्क और बालू मिश्रित कांप मिट्टी (दोमट मिट्टी) उपयुक्त रहती है।
 - जौ की प्रमुख किस्में ज्योति, राजकिरण, R-D. 2508, मोल्वा आदि हैं।
 - राजस्थान में प्रमुख जौ उत्पादन जिले जयपुर (सर्वाधिक), उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा व अजमेर हैं।
 - जौ का उपयोग मिस्सी रोटी बनाने, मधुमेह रोगी के उपचार, शराब व बीयर बनाने, माल्ट उद्योग में किया जाता है।
3. बाजरा- विश्व का सर्वाधिक बाजरा भारत में पैदा होता है। बाजरे के उत्पादन एवं क्षेत्रफल में राजस्थान का भारत में प्रथम स्थान है। राजस्थान देश का लगभग एक तिहाई बाजरा उत्पादित करता है। बाजरा राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्र पर बोई जाने वाली खरीफ की फसल है। बाजरा के लिए शुष्क जलवायु उपयुक्त रहती है। बाजरे की बुवाई मई, जून या जुलाई माह में होती है। बाजरे की बुवाई करते समय तापमान 25° से 35° सेन्टीग्रेड तक होना चाहिए।

